CC-0. Digitized by State Central Library, Hyderabad

CC-0. Digitized by State Central Library, Hyderabad

॥ श्री ॥

अथ एकादशी महात्म्य

भाषा टीका

टीकाकार—प्रेम "कवि"

प्रकाशक
पुस्तक मंदिर
मथुरा

मूल्य ३) मात्र

CC-0. Digitized by State Central Library, Hyderabad

CC-0. Digitized by State Central Library, Hyderabad

मार्गशीर्ष कृष्णा ११ से नाम क्रम संख्या इस प्रकार है।

१-उत्पन्ना २-मोक्षदा ३-सफला ४-पुत्रदा ५-षट्तिला ६-जया ७-विजया ८-आमलकी ९-पापमोचनी १०-कामदा ११-वरूथिनी १२-मोहनी १३-अपरा १४-निर्जला १५-योगिनी १६-देवशयनी १७-पवित्रा १८-पुत्रदा १९-अजा २०-परिवर्तिनी २१-इन्दिरा २२-पाशांकुशा २३-रमा २४-प्रबोधिनी अधिक की मोदिनी व परमा कमला नाम से कही जाती है।

नैमुषार वन में शौनक आदि अठासी हजार ऋषिश्वरों से सूतजी कहने लगे हे ऋषियो! पहले भगवान श्री कृष्ण ने प्रेम सहित एकादशी का महात्म्य विधि पूर्वक इस तरह कहा था ॥ १ ॥ कि हे ऋषियों एकादशी का महात्म्य और उत्पति जो कोई सुनता है वह इस

CC-0. Digitized by State Central Library, Hyderabad

संसार में [illegible] मास में [illegible] (मोह) की [illegible] है ॥ २ ॥ अर्जुन बोले हे [illegible] ! इस [illegible], हे [illegible]
नियम है इसके करने से क्या फल मिल सकता है। भक्त वत्सल ! यह सब कहिये ॥ ३ ॥ श्री कृष्ण बोले हे अर्जुन ! कार्तिक की कृष्ण
एकादशी को व्रत करे ॥ ४ ॥ दशमी दिन की रात्रि को पूरी भूख के समय थोड़ा सा भोजन करे ॥ ५ ॥ दूसरे दिन के पहले कुल्ला आदि
कर लेवे ॥ ६ ॥ उस समय को [illegible] रात्रि में ब्रह्मचारी रहे सवेरे एकादशी व्रत करने का संकल्प करले ॥ ७ ॥ हे अर्जुन !
दोपहर के समय स्नान कर पवित्र होवें स्नान [illegible] तालाब अथवा बावड़ी का कहा है ॥ ८ ॥ नदी व तालाब न हो तो कुंआ
पर ही स्नान करते समय मिट्टी स्नान करने के लिये 'अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते, विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे इस मंत्र से मिट्टी शरीर पर मले ॥ हे
हे मृत्तिका मेरे जन्म से इकट्ठे किये हुए पापों को हरले जिससे मोक्ष पाऊं ॥ ९ ॥ इस प्रकार फिर पवित्र जल से स्नान कर पापी चोर
पाखण्डियों से भाषण न करना चाहिये ॥ १० ॥ झूंठ बोलना देवता, वेद, ब्राह्मणों की बुराई करने वाले और दूसरी माता, चाची, बुआ,
मौसी इत्यादि की लड़की से विषय करने वाले पुरुष ॥ ११ ॥ दूसरे के धन से निर्वाह करने वालों से बात चीत न करे अगर उनसे कैसा
भी हो जाय तो सूर्य नारायण के दर्शनकर क्षमा मांगे ॥ १२ ॥ स्नानादि कर्मों से निवृत्त होने पर मन्त्रों से भगवान की पूजा करें या
मन्दिर में दीपक रखे ॥ १३ ॥ हे अर्जुन ! निद्रा और मैथुन का त्याग और भगवान का गुणगान तथा कथा दिन रात अवश्य करते हुए
बितावे ॥ १४ ॥ इसके बाद प्रातःकाल यथा शक्ति दान दे प्रणाम कर ब्राह्मणों से क्षमा मांग कर इस विधि से एकादशी व्रत समाप्त करना
चाहिये ॥ १५ ॥ धर्मात्मा पुरुष को कृष्ण पक्ष, व शुक्ल पक्ष की एकादशी में कोई भेद न समझना चाहिये ॥ १६ ॥

अथ एकादशी माहात्म्यं भा. टी. प्रारम्भः ।

—०=०—

नैमिषारण्य में अट्ठासी हजार शौनकादिक ऋषियों से सूतजी बोले कि हे ऋषियो ! पूर्व काल में श्रीकृष्ण भगवान ने प्रेम से एकादशी के उत्तम व्रत का उसके माहात्म्य और विधि से युक्त विस्तार रूप से उपदेश दिया था ॥ १ ॥ कि हे

श्री कुञ्जविहारिणे नमः ॥ सूत उवाच ॥ एवं प्रीत्या पुरा विप्राः श्रीकृष्णे परं व्रतम् ।
कथितं तत्प्रयत्नेन यः कुर्याद्भुवि मानवः ॥ १ ॥ भुक्त्वा भोगाननेकांस्तु विष्णुलोकं प्रयाति सः ॥
पार्थ उवाच ॥ उपवासस्य नक्तस्य तथैवायाचितस्य भोः ॥ किं पुण्यं किं विधानं हि ब्रूहि सर्वं
जनार्दन ॥ २ ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ हेमन्ते चैव संप्राप्ते मासि मार्गशिरे शुभे । शुक्लपक्षे तथा

ब्राह्मणो ! एकादशी की उत्पत्ति को जो कोई सुनता है वह इस लोक में अनेक प्रकार के सुख को भोगकर अन्त में विष्णु लोक को प्राप्त करता है ॥ २ ॥ तब अर्जुन बोले हे प्रभो ! उपवास, नक्त, और एक भुक्त करने की

क्या विधि है और इसको करने से क्या पुण्य है ? हे जनार्दन ! यह सब कृपा करके मुझसे कहिये ॥ २ ॥ श्रीकृष्णजी बोले हे अर्जुन ! हेमंत ऋतु के अगहन महीना में कृष्ण पक्ष की एकादशी के दिन व्रत करे ॥ ३ ॥ [illegible] उसके पूर्व अर्थात् दशमी के दिन पूर्व में कहे प्रदोप काल में अर्थात् सूर्य के प्रकाश को मलीन देखकर दतवन आदि [illegible] करके

पार्थ एको दशयामुपोष्य च ॥ ३ ॥ दशम्यां चैव तत् किंचित् यः कुर्यात्सुदृढं व्रतम् ॥ नक्तं च तद्दिने कृत्वा दशम्यां दन्तधावनम् ॥ ४ ॥ दिवसस्याष्टमे भागे मन्दीभूते दिवाकरे तत्र नक्तं विजानीयान्न नक्तंनिशि भोजनम ॥ ५ ॥ ततः प्रभातसमये सकल्प्य नियमांश्चरेत् ॥ मध्याह्ने च तथा पार्थ शुचिः स्नातः समाहितः ॥ ६ ॥ नद्यां तडागे वाप्यां वा उत्तमं मध्यमं लघः ॥ कूमाज्झेयं तथा कूपे तद्-भावे प्रशस्यते ॥ ७ ॥ अश्वक्रांते रथक्रांते विष्णुक्रांते वसुन्धरे ॥ मृत्तिके हर मे पापं यन्मया

॥ ५ ॥ उसी दशमी के दिन को नक्त जाने, नक्त काल में और रात्रि में भोजन न करके संयमी रहे। प्रातः काल एकादशी व्रत करने का संकल्प करे ॥ हे अर्जुन ! मध्याह्न में स्नान करके शुद्ध हो जावे, नदी का स्नान उत्तम है, तालाब का स्नान मध्यम और बावली का स्नान अधम बतलाया है ॥ ६ ॥ यदि नदी, तालाब आदि न मिले तो कूप पर ही स्नान

CC-0. Digitized by State Central Library, Hyderabad

करे स्नान करते समय मृत्तिका स्नान करने के लिये "अश्वक्रांते" इस मंत्र को पढ़कर शरीर में लगाये ॥ ८ ॥ और कहे कि हे मृत्तिके मेरे जन्मान्तर के सञ्चित पापों को तू हरण कर तेरे पाप नाश करने से मैं परम गति को प्राप्त करूंगा ॥ ९ ॥ एकादशी व्रत करने वाला मृत्तिका स्नान के पश्चात शुद्ध स्नान करे। व्रत के दिन पतित, चोर, पाखण्डी

पूर्वसंचितम् ॥ ८ ॥ त्वया हतेन पापेन गच्छामि परमां गतिम् ॥ अनेन मृत्तिकास्नानं विदधीत व्रती नरः ॥ ९ ॥ नालपेत् पतितैश्चौरैस्तथा पाषण्डिभिः सह ॥ मिथ्यापवादिनो देववेदब्राह्मण-निन्दकान् ॥ १० ॥ अन्यांश्चैव दुराचारानगम्यागामिनस्तथा ॥ परद्रव्यापहर्तॄंश्च देवद्रव्यापहारिणः ॥ ११ ॥ न सम्भाषेत दृष्ट्वाऽपि भास्करं चावलोकयेत् ॥ ततो गोविन्दमभ्यर्च्य नैवेद्यादिभिरादरात् ॥ १२ ॥ दीपं दद्याद् गृहे चैव भक्तियुक्तेन चेतसा ॥ तद्दिने वर्जयेत् पार्थ निद्रां मैथुनमेव च ॥

इनके साथ बातचीत न करे ॥ १० ॥ असत्य बोलने वाले, देवता, वेद और ब्राह्मणों की निंदा करने वाले तथा सौतेली माता, चचेरी बहिन, फूफी की कन्या मौसी आदि की कन्या व उन गमन करने वाले से ॥ ११ ॥ दूसरे के धन को हरण करने वाले देवता के धन से सुख उठाने वालों से भी बातचीतें न करे, उन लोगों को देख लेवे तो सूर्य भगवान्